

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतीक से परिष्कार तक: आध्यात्मिक विज्ञान के स्वर्णिम सूत्र

कर्मकाण्ड, उपासना और नव-सृजन का मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक आधार (अध्याय ९-११)

उद्देश्य:

सामान्य जन के लिए धर्म-धारणा का तार्किक, वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन।

आधार:

क्रान्तिधर्मी साहित्य

प्रतीक पूजा का तत्त्वदर्शन: एक मनोवैज्ञानिक विज्ञान

ईश्वर को मनुहार नहीं, मनुष्य को परिष्कार चाहिए



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

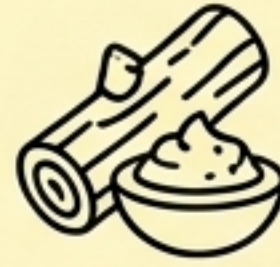
पूजा के उपकरणों का वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक अर्थ

प्रत्येक वस्तु एक 'कमांड' (Command) है, जो हमारे आचरण को निर्देशित करती है।



जल (Water): शीतलता का प्रतीक।

→ मनोविज्ञान: क्रोध और उद्वेग त्यागकर शांत और संतुलित रहें।



चन्दन (Sandalwood): घिसने पर भी सुगंध।

→ मनोविज्ञान: कष्ट सहकर भी दूसरों को प्रमुदित (सुगंधित) करें।



पुष्प (Flower): खिलना और हँसना।

→ मनोविज्ञान: जीवन में हमेशा मुस्कुराने और प्रसन्न रहने की प्रवृत्ति।



धूप (Incense): वातावरण की शुद्धि।

→ मनोविज्ञान: अपने चारों ओर सत्प्रवृत्तियों का सुगन्धित माहौल बनाना।



दीपक (Lamp): जलकर प्रकाश देना।

→ मनोविज्ञान: ज्ञान का प्रकाश फैलाने हेतु स्वयं का उत्सर्ग।



अक्षत (Rice): अटूट निष्ठा।

→ मनोविज्ञान: अपनी कमाई का एक अंश श्रेष्ठ कार्यों (परमार्थ) में लगाना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान ‘मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञा आर आप सबसे कहिरगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोषिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाया जाएगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधामी मादिय के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सिग्नल और एक्शन: रेलवे गार्ड का दृष्टांत

कर्मकाण्डों की सार्थकता पुरुषार्थ में है, केवल लकीर पीटने में नहीं।



गार्ड की झण्डी (रंग): लाल / हरा



• **तथ्य:** कपड़े के रंग में कोई जादुई शक्ति नहीं है।



• **क्रिया:** यह ट्रेन चलाने या रोकने का 'संकेत' (Signal) है।



कर्मकाण्ड / पूजा (Rituals)



• **तथ्य:** भगवान को रिझाने से बिना पुरुषार्थ कामनाएँ पूरी नहीं होतीं (बिना बीज बोए फसल नहीं कटती)।



• **क्रिया:** यह देवत्व के अवतरण हेतु स्वयं को 'प्रशिक्षित' करने का संकेत है।

उपासना का त्रिविध विज्ञान

प्रज्ञा परिजनों के लिए आत्म-विकास का त्रिकोणीय मॉडल

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि नि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



प्राणायाम (Breath Control)

- **प्रक्रिया:** ब्रह्मांडव्यापी प्राण-तत्त्व को खींचना।
- **विज्ञान:** अशुभ को बाहर फेंकना (Detoxification) और दिव्यता धारण करना।

जप (Chanting)

- **प्रक्रिया:** ईश्वर के विधान को बार-बार स्मृति पटल पर अंकित करना।
- **विज्ञान:** ‘विस्मरण’ की भूल को रोकना। मन की सफाई (जैसे साबुन रगड़ना)।

ध्यान (Meditation)

- **प्रक्रिया:** लक्ष्य (राम, कृष्ण, शिव) के साथ तद्रूप होना।
- **विज्ञान:** अवचेतन मन में उन श्रेष्ठ गुणों का अवशोषण (Absorption)।

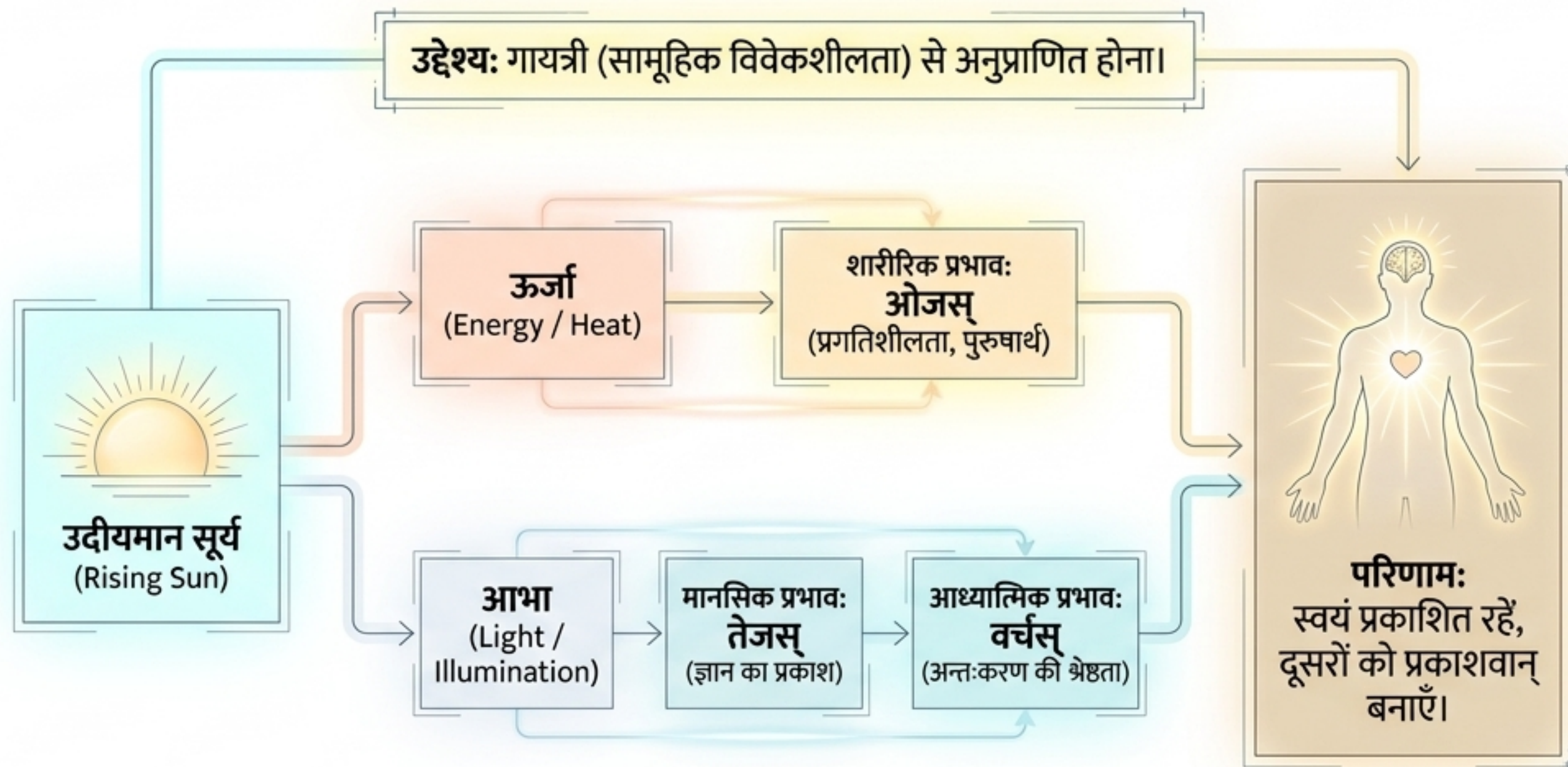
ध्यान का स्वरूप: सूर्य और गायत्री का विज्ञान

ध्यान केवल कल्पना नहीं, व्यक्तित्व निर्माण की इंजीनियरिंग है।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



जीवन प्रबंधन: प्रतिदिन का 'जीवन-मरण' चक्र

दिनचर्या को एक सम्पूर्ण जीवन मानते हुए व्यवस्थित करना



प्रातःकाल (जन्म)

- **भाव:** आँख खुलते ही नया जन्म।
- **कर्म:** उत्कृष्टता का समावेश करते हुए दिनभर की रूपरेखा बनाना।
- **वैज्ञानिक तथ्य:** सुबह का संकल्प (Pre-planning) भटकाव रोकता है।

दिनभर (जीवन)

- **कर्म:** समय, श्रम और चिंतन का कठोर सदुपयोग।

रात्रिकाल (मृत्यु)

- **भाव:** एक दिन के जीवन का अवसान।
- **कर्म:** कठोर समीक्षा (Audit)। व्यतिक्रमों का प्रायश्चित और अगले दिन की सतर्कता।

दिनभर (जीवन)

- **कर्म:** समय, श्रम और चिंतन का कठोर सदुपयोग।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को येरे क्रान्तिधर्यी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

तपस्वी बनने का विज्ञान: चतुर्विध संयम

गुरुवार का उपवास/ब्रह्मचर्य मात्र भूखे रहना नहीं, ऊर्जा का संरक्षण है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगक्रषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

विचार संयम (Thought Control)
मानसिक एकाग्रता और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास।



इन्द्रिय संयम (Sense Control)
शारीरिक ऊर्जा (Physical Energy) का क्षरण रोकना। चटोरेपन और कामुकता पर अंकुश।



समय संयम (Time Management)
सबसे मूल्यवान संपदा का श्रेष्ठ कार्यों में निवेश।



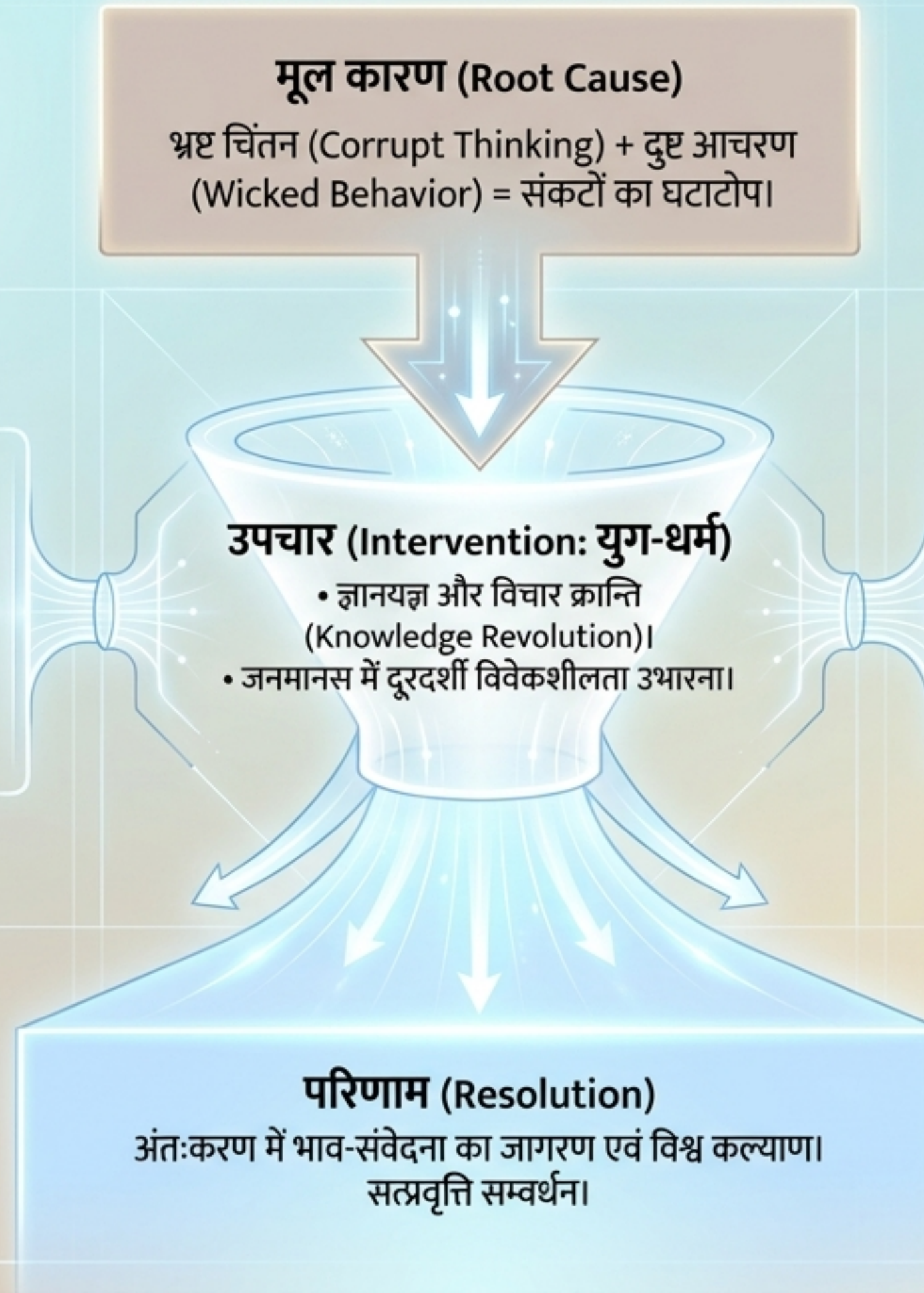
अर्थ संयम (Financial Discipline)
संसाधनों का अपव्यय (फिजूलखर्ची) रोककर परमार्थ में लगाना।



परिणाम (Outcome): इन चार संयमों को साधने वाला ही सच्चा ‘तपस्वी’ (ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी) बनता है।

युग-धर्म: समय की पुकार और महाकाल की चुनौती

समस्याओं का एकमात्र वैज्ञानिक उपचार:
लोकमानस का परिष्कार



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सुयोग का लाभ: बैटरी चार्ज करने की विधा

बदली परिस्थितियों में नया प्रकाश और मार्गदर्शन कैसे पाएं?

कदम 1: आत्म-निरीक्षण

मनःस्थिति और थकान का आंकलन।

कदम 2: आध्यात्मिक रिचार्ज (शान्तिकुञ्ज)

- ९ दिन का साधना सत्र (वर्ष में या दो वर्ष में एक बार)।
- **विज्ञान:** वातावरण और उच्च-चेतना के प्रभाव से मानसिक 'बैटरी चार्ज' करना।

कदम 3: क्षेत्र में वापसी

नए संकल्प, नए प्रकाश और ऊर्जा के साथ परमार्थ कार्यों में जुटना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

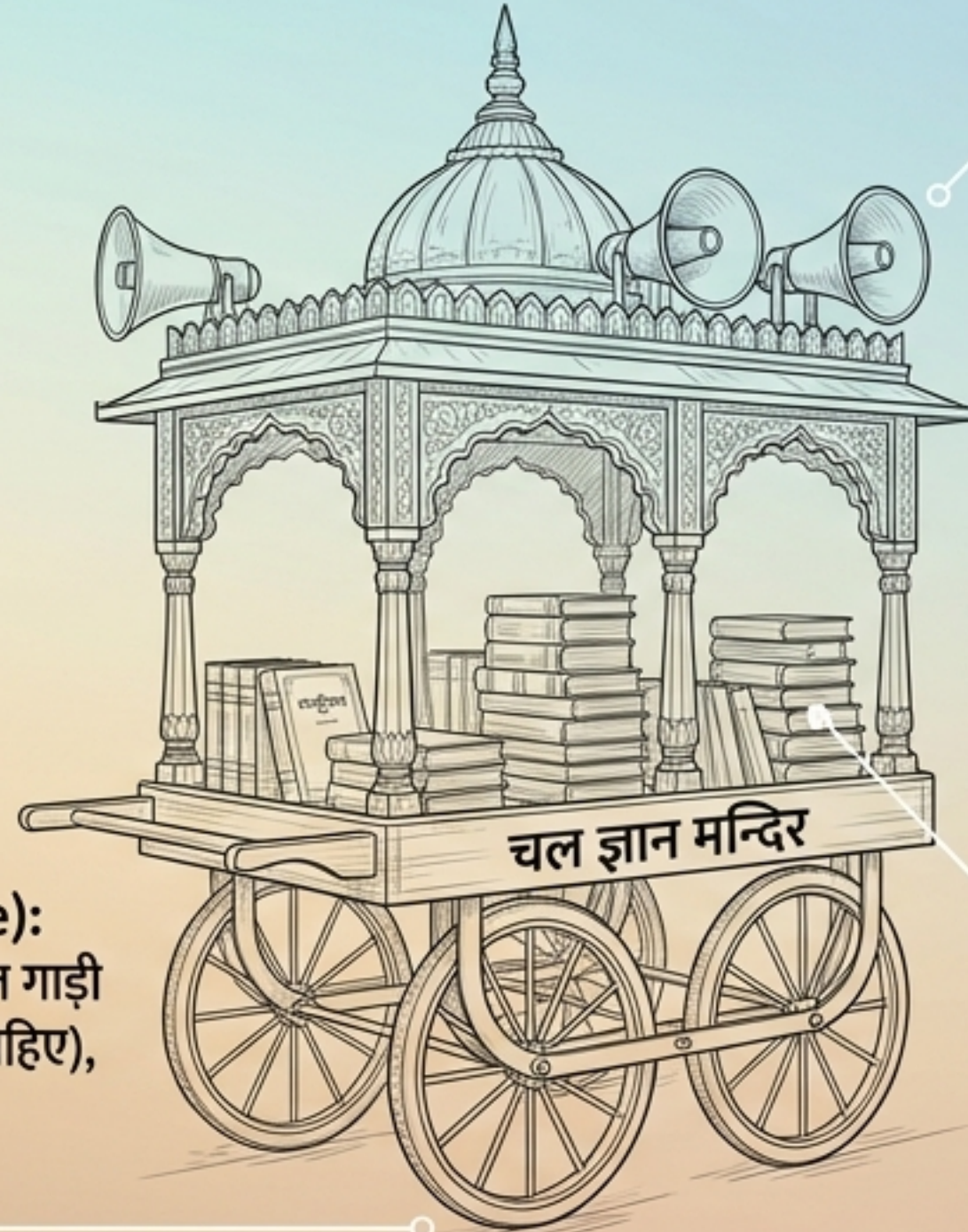
‘चल ज्ञान मन्दिर’: नव-जागरण का वैज्ञानिक उपकरण

धर्मशाला और प्याऊ से आगे—विचारों का परमार्थ

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

ढांचा (Structure):
चार पहियों की धकेल गाड़ी
(साइकिल/रबड़ के पहिए),
मंदिरनुमा आकृति।



तकनीक (Technology):
टेपरिकार्डर एवं लाउडस्पीकर
(संगीत सम्मेलन हेतु)।

लागत (Cost):
लगभग एक तोले सोने के मूल्य के
बराबर (सामूहिक सहयोग से संभव)।

प्रभाव (Impact):
नुक्कड़ सभा, प्रभातफेरी जैसा माहौल।
विचारों का सीधा प्रसार।

सामग्री (Content):
युग-धर्म का पक्षधर साहित्य (सस्ता
और निःशुल्क पढ़ने हेतु)।

इतिहास का प्रमाण: पूजा बनाम युग-कार्य

सच्चे साधक अपनी मर्जी की पूजा छोड़कर, ईश्वरीय योजना के भागीदार बनते हैं।

असहयोग आंदोलन (Past)



नेतृत्व: कांग्रेस के मूर्धन्य नेता।



माध्यम: खादी प्रचार की धकेल गाड़ियाँ।



परिणाम: जन-जागरण और स्वतंत्रता की प्राप्ति।

युग परिवर्तन (Present)



नेतृत्व: सेवाभावी सज्जन और प्रज्ञा परिजन।



माध्यम: 'चल ज्ञान मन्दिर' (ज्ञान रथ) घुमाना।



आदर्श: हनुमान, अर्जुन, शिवाजी, विवेकानन्द
— जिन्होंने एकांत पूजा से अधिक समय
महाकाल के आमंत्रण (युग-कार्य) को दिया।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

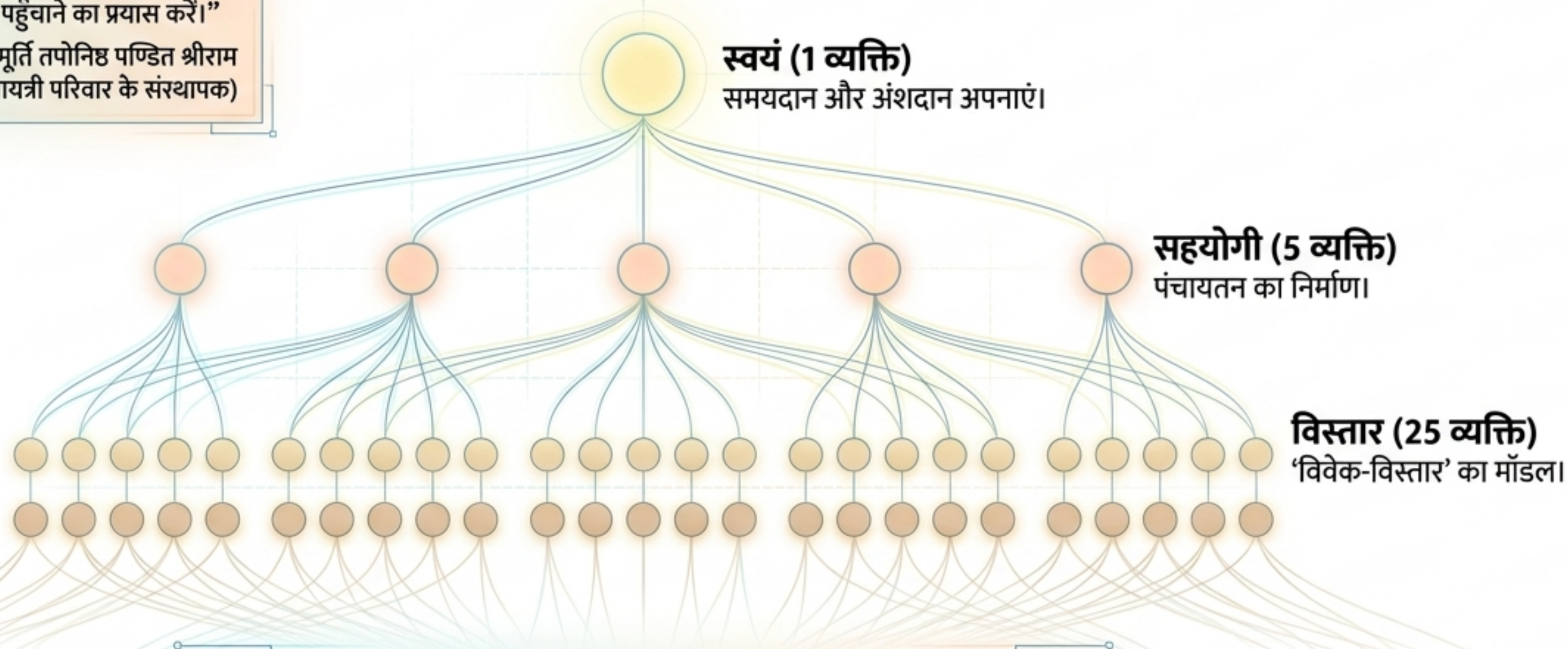
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

गुणन प्रक्रिया: ‘विवेक-विस्तार’ का गणित

एक से पाँच का सिद्धान्त: विश्व को नव-जीवन से अनुप्राणित करना



महा-विस्तार (125 व्यक्ति): नव-मानवों का नेटवर्क।

विज्ञान: जब विचारशीलता नेटवर्किंग (Multiplication) के माध्यम से फैलती है, तो असाधारण परिष्कार सुनिश्चित है।

निष्कर्ष: महाकाल के भागीदार बनें

मनचाहे वरदान की विडम्बना छोड़कर, युग के मत्स्यावतार का साथ दें

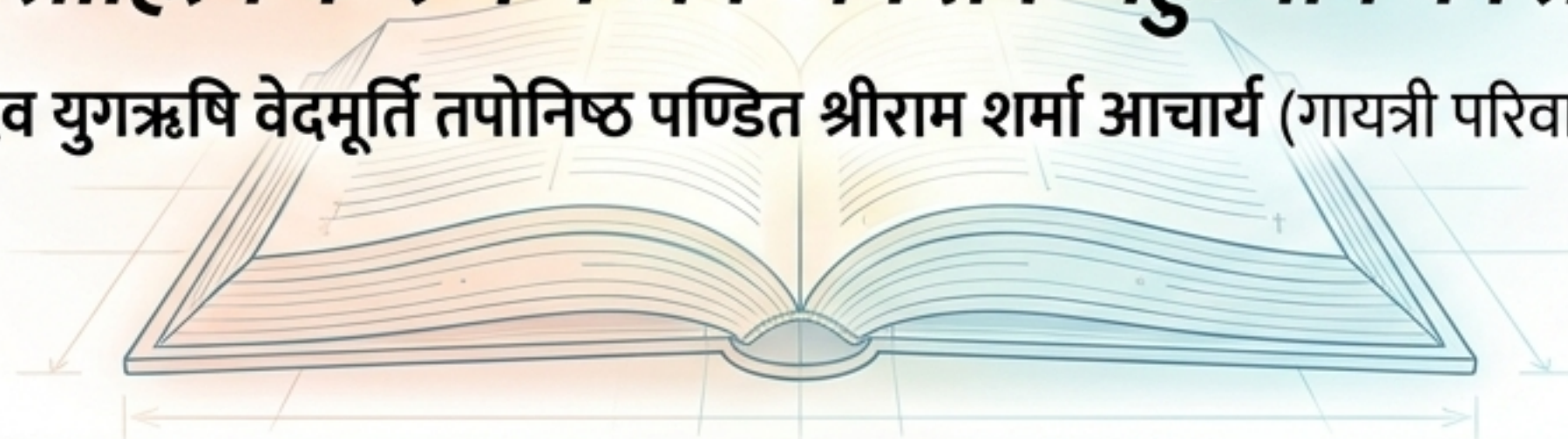


अंतिम संदेश: इन क्रान्तिधर्मी विचारों को लागत मूल्य पर जन-जन तक पहुँचाना ही सच्ची ईश्वरीय पूजा है।

ज्ञान शरीर का संकल्प

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जि जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



- साहित्य का प्रसार: क्रान्तिधर्मी साहित्य (१९८८-९०) जीवन साधना का सार है।

- नो कॉपीराइट (No Copyright): लागत मूल्य पर छापें और विचार क्रान्ति को फैलाएं।

- आइए, इस प्रस्तुत अनुपम सुयोग का लाभ उठाएं और महाकाल के आमंत्रण को स्वीकार करें।